८. यथार्थ-३ : सत्ता में प्रकृति संपृक्त है

दिनांक २५/०९/२०११

व्यापक वस्तु अर्थात सत्तामयता, पारगामी पारदर्शी होने के आधार पर व्यापक होना, निरंतर रहना समझ में आता है | यही मुख्य बात है | सहअस्तित्व अर्थात व्यापक में सम्पूर्ण प्रकृति अर्थात सम्पूर्ण जड़, चैतन्य प्रकृति समाई हुई है | समाई हुई रहने से ही सम्पृक्तता का ज्ञान होता है | प्रमाण रूप में सह-अस्तित्व सहज प्रतिरूप को मानव प्रमाणित करने योग्य हो जाता है | यही जागृति है | इस प्रकार सच्चाइयों को प्रमाणित करना ही जागृति है | मानव सहअस्तित्व का प्रतिरूप होने के फलस्वरुप यह अधिकार अर्थात समझदारी का स्वरुप अपेक्षा के रूप में हर नर नारी में विद्यमान है | इसी क्रम में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन भावी रहा है | चेतना विकास में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना स्पष्ट है | विकसित चेतना में पारंगत होना हर नर,नारी का मौलिक अधिकार है | जबकि प्रकृति चार अवस्थाओं में है,समझदार होने का अधिकार केवल मानव में है जिसको हम विकसित चेतना कहते हैं | विकसित चेतना में ही क्रम से अखण्डता, सार्वभौमता स्पष्ट होता है | मानव परम्परा में अखण्डता का प्रमाण, सार्वभौमता का प्रमाण है | जीव संसार,वनस्पति संसार, पदार्थ संसार में अध्ययन करने की परम्परा नहीं है | मानव परम्परा में अध्ययन कराने की, करने की परम्पराहै | यह पीढ़ी से पीढ़ी के क्रम में सम्पन्न होना पाया जाता है | यह मानव में मौलिकता का एक भाग है | विकसित चेतना पूर्वक मौलिकता सहित प्रमाण है | मानव ही प्रमाण परम्परा का दावेदार है |

मानव आज भी जीव चेतना में जीते हुए परम्परा के रूप में सुविधा संग्रह प्रवृति में फंस चुका है | चाहे ज्ञानी हो, विज्ञानी हो, अज्ञानी हो, सुविधा संग्रह के पक्ष में ही सभी की गतिविधियाँ दिखाई पड़ती हैं | मानव अपना पहचान बनाने, सच्चाई को व्यक्त करने का पक्षधर है | यह भले ही सर्वमानव में न हो, पर अत्यधिक मानव में है ही | सच्चाई का स्वरुप सहअस्तित्व ही है | सहअस्तित्व स्वयं व्यापक रुपी सत्ता में सम्पृक्तजड़ चैतन्य प्रकृति ही है | सम्पृक्तता एक ऐसी यथार्थता है जिसका विकल्प होना सम्भव नहीं है | अर्थात ज्ञान विज्ञान के अनुसार सत्ता न हो ऐसा एक भी स्थिति मिलता नहीं | यह तीनों काल में देखा जा सकता है | साथ में यह भी देखने को मिलता है कि पदार्थ न हो ऐसा काल सिद्ध नहीं है | भले ही प्रकृति रुपी वस्तुएं किसी स्थली में रहते हुए रिक्त स्थली शेष रहता ही है | जैसा यह धरती है, इसके सभी ओर शून्य है | इसी प्रकार परमाणु है, इसके बीच रिक्त स्थली दिखती है | इस प्रकार स्थूल से स्थूल, सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रकृति विद्यमान है | इनके बीच में दूरियां बनी रहती हैं | इसी दूरी वश एक दूसरे का पहचान होना पाया गया है | ये सभी दूरियां सत्तामयता ही है |

इस प्रकार सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति एक दूसरे को पहचानने में समर्थ हुआ | इसलिए हर सूक्ष्म से सूक्ष्म, स्थूल से स्थूल वस्तु सत्ता में भींगे, डूबे, घिरे, रहने से ऊर्जासम्पन्न,चेतना सम्पन्न होना पाया गया है | चेतना सम्पन्नता के क्रम में ही जीव चेतना, मानव चेतना, देव मानव चेतना, दिव्य मानव चेतना होना पहचाना गया है | मानव में ही चारों चेतनाओं का, श्रेष्ठता का मूल्यांकन होना सहज रूप में प्रमाणित होना पाया गया है | इसी क्रम में मानव सन्२००० ई. तक जीव चेतना में जीते हुए इनसे अच्छा जीने के लिए प्रयत्न किया है | सन् २००१ से मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के आधार पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा इसके सम्पूर्ण स्पष्टता के लिए प्रस्तुत है | कुछ लोग इसका अध्ययन कर रहे हैं | इनमें से कुछ लोग समझे भी होंगे | इनमें से कुछ प्रमाणित होने हेतु उद्यत भी होंगे अर्थात प्रयत्नशील भी होंगे | यह मानव सहज प्रक्रिया है | इसी क्रम में मानव निर्दोष होने की

सम्भावना है | निर्दोषता का स्वरुप व्यवहार मूलक, विचारमूलक, तथा अनुभवमूलक प्रमाणों को प्रस्तुत करना सकारात्मक भाग है | इस क्रम में नकारात्मक भाग यही है कि जीव चेतना से मुक्ति पाना नहीं हुआ | जीव चेतना मानव परम्परा के लिए भ्रामक व अपराधिक होना सिद्ध हो चुका है | जीव चेतना में जीते हुए पशु मानव, राक्षस मानव हर आयु वर्ग में होते हैं | जीव संसार की तरह जीते हैं इसलिए पशु मानव, राक्षस मानव कहलाते हैं | हर आयु वर्ग में परीक्षण किया जा चुका है | हर नर,नारी सकारात्मक भाग को स्वीकारते हैं,नकारात्मक भाग को नकारते ही हैं | इससे स्पष्ट हो चुका है कि मानव सकारात्मकता का पक्षधर है | इस प्रकार सकारात्मकता का अर्थ अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण ही है |

इन सबका स्पष्टता चेतना विकास मूल्य शिक्षा के अध्ययन क्रम में ही हो पाता है | यह मर्यादा व्यापक वस्तु में समाहित है | जड़ चैतन्य प्रकृति का ज्ञान का फलन चैतन्य प्रकृति के ज्ञान के आधार पर अर्थात अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान के आधार पर विचार प्रमाण, व्यवहार प्रमाण प्रस्तुत करता है | यही जागृतमानव का स्थिति, गति है | इसी क्रम में अर्थात जागृतिक्रम में जागृति एवं जागृतिपूर्णता के लिए विकसित चेतना का आचरण मानव में पहचाना गया है | जागृति केवल मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना क्रम में ही है | यह श्रेष्ठता के आधार पर बना हुआ व्यवस्था है | क्योंकि जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर,देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम है | इसका पूरा अध्ययन चेतना विकास मूल्य शिक्षा के साथ सर्वमानव अथवा हर नर, नारी को बोध होता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत